घर के सजाने एवं संवारने की कला को आंतरिक गृह-सज्जा या अंतरसज्जा (Interior decoration) कहते हैं।

गृह-सज्जा का अर्थ केवल कीमती वस्तुओं से घर को सजाना नहीं होता है। ग्रामीण गृहिणी अपनी झोपड़ी की मिट्टी की दीवारों पर चित्रकारी करती हैं, जिसे भित्ति चित्र या 'म्यूरल' कहते हैं। वह मिट्टी की दीवार पर ही अपनी कला-कृति को प्रदर्शित करती है। गृहिणी की यही इच्छा गृह-सज्जा का वास्तविक रूप है। अपनी रचनात्मक भावनाओं को वह गोबर से पुती दीवार पर अभिव्यक्त करती है। फर्श पर अल्पना बनाना, दीपावली या शादी-ब्याह के समय झंडियों रंग-विरंगे कागजों एवं फूल-पत्तियों से घर को सजाना, घर को साफ-सुथरा रखना, सभी सामानों को झाड़-पोंछ कर निश्चित उचित स्थान पर रखना, गृह-सज्जा के विभिन्न अंग हैं।

गृह-सज्जा सुविधा एवं सौन्दर्य पर आधारित होता है। गृह-कला (Home Arts) का अर्थ घर से संबंधित उस कला से है जिसके द्वारा गृहिणी घर को अधिक आकर्षक बनाती हैं। सजावट का मतलब यह नहीं होता कि घर को रंग-विरंगे सामानों से भरकर अजायबघर बना दिया जाए। सजावट और व्यवस्था का संबंध वस्तुओं की गिनती एवं कीमत से नहीं होता, बल्कि गृहिणी एवं परिवार वालों की आवश्यकता एवं रुचि से होता है। सजावट का उद्देश्य केवल घर को सुंदर ही बनाना नहीं होता, बल्कि घर के अंदर की अस्त-व्यस्त वस्तुओं को इस प्रकार क्रमबद्ध करना तथा एक रूप देना रहता है कि एकता के साथ-साथ लय,

Scanned with CamScanner

अनुपात एवं समानता दिखाई दे। सजावट के माध्यम से गृहिणी अपनी इच्छाओं की पूर्ति एवं रुचियों को प्रकट करती है।

स्टेला सुंदरराज के शब्दों में—Interior decoration is a creative art which can transform an ordinary house. It is the art of adjusting the space and equipment to suit the fundamental and cultural needs of the dwellers and thus creating a pleasant atmosphere. By combining use, economy, beauty and individuality, one is able to create a unique effect of charm in the house one lives in, reflecting the refined and cultured tastes of the inmates."

Scanned with CamScanner

व्यवस्था तथा सजावट की शैलियाँ—घर की सजावट में मुख्यत: दो शैलियों का प्रभाव दिखायी पड़ता है—

१. विदेशी शैली या पाश्चात्य शैली,

२. भारतीय शैली।

दोनों शैलियों की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं। प्रश्न है कि भारतीयों के लिए किस शैली की सजावट उपयोगी होगी? घर या वस्तुओं की महत्ता उनके उपयोग पर निर्भर करती है अत: सजावट इस प्रकार की होनी चाहिए, जिससे व्यक्तियों को आराम तथा सुख मिल सके।

हमारी वेश-भूषा, रहन-सहन और बोल-चाल आदि पर आधुनिक युग में विदेशी सभ्यता का काफी गहरा प्रभाव दिखायी देता है। फलस्वरूप हम सजावट

Scanned with CamScanner

में भी विदेशी शैली का बहिष्कार नहीं कर सकते। सजावट में हमारा लक्ष्य यह हो कि हम दोनों के गुणों को अपने आराम के दृष्टिकोण से अपनाएँ। दोनों शैलियों में कुछ गुण तथा कुछ दोष हैं। इसलिए परिस्थिति के अनुसार दोनों के गुणों को अपनाना और अवगुणों का बहिष्कार करना एक कुशल गृहिणी या सजावटकर्त्ता की कुशलता और बुद्धिमत्ता का प्रतीक है।

देशी और विदेशी शैलियों के गुण और दोष—दोनों शैलियों में अपनी-अपनी झलक होती है तथा सुन्दरता और आकर्षण में दोनों समान ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। भारतीय कला और सुंदर चित्रकारी आज भी विदेशियों को प्रभावित कर रही हैं और वे इसे अपनाना चाहते हैं। भारतीय मूर्तिकला तथा काष्ठकला से सुसज्जित चौकी, मसनद, तख्त, आसन आदि आरामदेह तथा सुन्दर प्रतीत होते हैं जहाँ कि विदेशी शैली की सोफा, कुर्सी आदि भी अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होती हैं तथा उठने-बैठने में आराम एवं फुर्ती देती हैं।

पाश्चात्य सभ्याता के अनुकरण के कारण आज की वेशभूषा तथा सुख और सुविधा की दृष्टि से शहरों में रहने वाली जनता कुर्सी-मेज का अभ्यस्त हो गई है। जमीन, चौकी और चटाई पर बैठने से आज के फैशन के अनुसार बनी चुस्त पोशाक में कठिनाई होती है तथा पोशाक में सिलवटें पड़ जाती हैं। इस दृष्टिकोण से विदेशी ढंग से सजा कमरा ही अधिक सुख-सुविधा के साथ फुर्ती प्रदान करता है। आज का मानव अधिक क्रियाशील है, उसके पास अनेक कार्य रहते हैं। जैसे—स्त्रियों का ध्येय केवल खाना बनाना और घर चलाना ही नहीं है, बल्कि नौकरी तथा बाहर का काम भी करना है। अतः, रसोईघर में नीचे बने लकड़ी के चूल्हे की अपेक्षा खड़ा चूल्हा, गैस तथा स्टोव आदि अधिक सुविधाजनक है। इससे समय तथा शक्ति दोनों ही बचती है।

Scanned with CamScanner